मेरे जीवन का संघर्ष एक सच्ची कहानी

अनामिका राजभर
कक्षा बी.ए. पंचम सेमेस्टर

एक दिन जब मैंने व्हाट्सएप खोला तो मेरे कॉलेज से एक संदेश आया था। हिंदी दिवस पर एक रचना लिखनी है। मुझे पता नहीं था कि कैसे रचना लिखते हैं। फिर भी मैने सोचा कि मुझे लिखना चाहिए। फिर मैं सोच रही थी कि किस विषय पर लिखें। मैंने सोचा कि मैं अपने जीवन के कठिन समय के बारें में लिखें।

जब हम ९वीं कक्षा में पढ़ रहे थे। तब हम हर दिन स्कूल जाते थे। मन लगाकर पढाई करते थे। एक दिन मेरे भाई के पैर में दर्द होने लगा। हमें लगा शायद खेलते समय चोट लग गई होगी इसलिए पैर दर्द कर रहा है। उसे दर्द का दवा दिया, जिससे उसका दर्द ठीक हो जाए। लेकिन दर्द ठीक नहीं हुआ क्योंकि वो दर्द होने के बावजूद भी खेलता था आराम नहीं करता था। गर्म पट्टी बाँधी, लेकिन कोई लाभ नही हुआ। जब मम्मी पुछती तो कहता कि पैर ठीक है। लेकिन कुछ समय बाद स्थिति इतनी बिगड़ गई, कि वह चल भी नहीं पा रहा था।

हमने सरकारी अस्पताल में दिखाया, एक्स-रे हुआ लेकिन कुछ पता नहीं चला। तो जिला अस्पताल गए, वहाँ भी वही हाल था। फिर भी दवा चलाए और हल्का गर्म पानी से पैर को घोने के लिए बोले और एक बार दिखाने के लिए कहा लेकिन उसी समय चीन के वुहान शहर से 'कोरोना वायरस' फैल गया था। इससे बहुत सारे देश प्रभावित हो गए थे। भारत में भी कोरोना महामारी की वजह से बहुत से लोगो की मौत हो रही थी। जिसको देखते हुए भारत सरकार ने देश में लॉकडाउन लगा दिया। जिसकी वजह से गाड़ियाँ, रास्ते सब बंद हो गए थे।

मेरे भाई को डॉक्टर के पास लेकर जाना था। समस्या यह थी कि उसे डॉक्टर के पास कैसे लेकर जाएं। क्योंकि हम एक मध्यमवर्गीय परिवार के लोग हमारी अपनी कोई गाड़ी नहीं थी। फिर मेरे पिता भाई को साइकिल पर बिठाकर ले गए, अस्पताल बहुत दूर था। उनको घर आने में रात के ९ बज गये थे। लेकिन वहा से भी पैर ठीक नहीं हुआ। फिर पिताजी बी. एच. यू. में लेकर गए। और वहाँ पर भी डॉक्टर ने एक्स-रे किया, लेकिन कुछ पता नहीं चला। फिर भी कुछ दिनों तक दवा चला, लेकिन उससे भी ठीक नहीं हुआ। बी. एच. यू. जो कि वाराणसी में है। बी. एच. यू. से कुछ दूरी पर एक प्राइवेट अस्पताल था। पिताजी उसमें लेकर गए तो वहाँ पर एम. आर. आई. हुआ, लेकिन कुछ पता नहीं चला कि पैर में क्या हुआ है। लेकिन दवा चलाए तो थोड़ा ठीक था लेकिन पूरी तरह से नहीं।

कुछ दिनों बाद फिर से पैर में दर्द होने लगा जिससे चलने में दिक्कत होने लगी थी। पिताजी भी घर पर नहीं थे। एक तरफ हमारी बोर्ड परीक्षा नजदीक आ रही थी और भाई की स्थिति दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही थी। स्थिति इतनी बिगड़ गई कि भाई चल भी नही पा रहा था। चलने के लिए सहारे के जरूरत पड़ती थी। लोग व्यंग करने लगे, ताने मारे, मजाक उड़ाया। लेकिन हमने हार नहीं मानी। 'जीवन कब किस मोड़ पर क्या दिखा दे, यह कोई नहीं जानता।'

१२वीं की बोर्ड परीक्षा आ गई। भाई चल नही पा रहा था। फिर भी हार नही मानी परीक्षा देने गयी। मैं पहले भाई को उसके परीक्षा केन्द्र पर छोड़ती थी। फिर खुद परीक्षा देने जाती थी। जब परिणाम आया तो मैं पास हो गई, लेकिन भाई असफल रहा। कुछ समय बाद मेरी बुआ आई और भाई को अपने साथ ले गई। वहाँ एक आयुर्वेदिक डॉक्टर के पास गए, तो उन्होंने एक उम्मीद दी की आप ठीक हो जाओगे। वह एक छोटे से कमरे में दवाई देते थे। उनके दवा से मेरे भाई की हालत ठीक होने लगी। चार महिने इलाज चला। और एक दिन जब भाई ने बिना सहारे अपने पैरों पर खड़ा होकर चला हमारी आँखो से खुशी के आँसू थम नही रहे थे। भाई फिर से ठीक हो गया। और १२वीं में दोबारा प्रवेश लिया और परीक्षा भी पास की।

जिन लोगो ने ताने मारे थे, उनका मुँह बंद हो गया। जब मेरी बी.ए. की परीक्षा थी तो मेरी तबीयत ठीक नहीं थी तो मुझे बाइक से परीक्षा दिलाने ले गए, तो हमें इतनी खुशी हुई की उसे बया नही कर सकती।

***